चौथा – अध्याय

** ४. स्वातंत्र्योत्तर कहानियों में नारी - चित्रण और सारिका सन् १९८९ ई. की कहानियों में प्रस्तुत नारी चित्रण की तुलना।

=====================================

** प्रस्तावना - स्वातंत्र्योत्तर युग में हिन्दी - कहानी - साहित्य के क्षेत्र में. पूर्व युग की भाँति ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक तथा मनोविश्लेषणात्मक आदि प्रवृत्तियों का समुचित विकास हुआ। इस युग की सबसे अधिक महत्वपूर्ण घटनाएँ भारतवर्ष की स्वतंत्रता और देश का विभाजन है। एक बहुत बड़ी संख्या में इन्हीं विषयोंपर इस युग में कहानियाँ लिखी गयीं। एक स्वतंत्र देश के रूप में शिक्षा, सभ्यता, संस्कृति, राजनीति तथा आर्थिक क्षेत्रोंसे सम्बन्धित अनेक नवीन परिस्थितियों का अविर्भाव हुआ और हिन्दी के कहानीकारों ने उसनपर अपनी रचनाएँ प्रस्तुत कीं। अन्तरराष्ट्रीय सम्बन्धों मे वृध्दि हुई तथा विकास की नई दिशाएँ सामने आयीं। स्वतंत्रता प्राप्ती के प्रयत्न विगत अनेक शताब्दियों से हो रहे थे। इसलिए इस महान घटना की व्यापक प्रक्रिया हुई।१

स्वातंत्र्योत्तर युग में हिन्दी साहित्य की विभिन्न रचनात्मक विधाओं के क्षेत्र में सबसे अधिक जागरूकता दिखाई पडती है। इसका प्रमुख कारण यह है कि इस युग के साहित्यकारों ने अनेक शताब्दियों के पश्चात् प्रथम बार एक स्वतंत्र देश के साहित्यकार की हैसियत से अपने उत्तरदायित्व को अनुभव किया और उसका निर्वाह किया। हिन्दी गद्य - साहित्य के क्षेत्र में सभी विधाओं के अंतर्गत अनेक लेखक सृजन कर रहे थे। निबन्ध के क्षेत्र में हजारीप्रसाद द्विवेदी, डॉ. वासुदेवशरण अग्रवाल, शांतिप्रिय द्विवेदी, रामवृक्ष बेनीपुरी, डा. भगवतशरण उपाध्याय, डा. नगेन्द्र, डा. सत्येन्द्र, डा. विनयमोहन शर्मा आदि लेखन कार्य कर रहे थे॥ एकांकी के क्षेत्र में डा. रामकुमार वर्मा, विष्णुप्रभाकर, जयनाथ, नलिन, भारतभूषण अग्रवाल तथा चिरंजीत आदि का विशेष योगदान है। उपन्यास के क्षेत्र में डा. हजारीप्रसाद, अमृतलाल, रांगेय, डा. देवराज आदि के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। कहानी के क्षेत्र में अमृतराय, बलवन्तसिंह, राजेन्द्र यादव, मोहन राकेश , फणीश्वरनाथ,

कमल जोशी, कमलेश्वर, मन्नू भण्डारी, ७ राजी सेठ, शशिप्रभा शास्त्री, शिवानी आदि अनेक लेखकों का उल्लेख किया जा सकता है। इनमें से अधिकांश लेखकों ने इस युग में एक जागरूक साहित्यकार के रूप में युगीन चेतना को अपनी रचनाओं में अभिव्यक्ति दी है।[२]

आलोच्य विषयका तुलनात्मक अध्ययन करने के लिए इसे तीन विभागों में विभाजित किया है :-

[१] सन्" ६० के पूर्व की कहानियों में चित्रित नारी।

[२] साठोत्तरी कहानियों में चित्रित नारी।

[३] "सारिका" १९८९ ई. की कहानियों मे चित्रित नारी।

---

१. १९४७ से १९६० तक की कहानियों में चित्रित नारी -

इस काल के प्रमुख कहानीकार निम्नलिखित हैं - सुभद्राकुमारी चौहान, श्रीमती उषादेवी मित्रा, श्रीमती कमला चौधरी, श्रीमती सुमित्राकुमारी सिनहा, कंचनलता, कमलात्रिवेणीशंकर, सत्यवती मल्लिक, इलाचन्द्र, जोशी, अज्ञेय, अश्क, यशपाल, अमृतलाल नागर, अमृतराय, रांगेय राघव,आदि ।

स्त्री और पुरुष की बौद्धिक क्षमताओं में अन्तर नहीं है, तथापि सामाजिक विषमताओं और कतिपय स्वभावगत विशेषताओं के कारण उनकी रुचि में भेद का होना स्वाभाविक है। प्रत्येक विषय की ओर देखने की दृष्टि में भिन्नता के कारण उन दोनोंमें फर्क है। श्रद्धा, सहानुभूति, सौजन्य, करुणा, उल्लास आदि जो गुण स्त्री में स्थित हैं उनकी अभिव्यक्ति वह स्त्री - चरित्र में सहजता से कर सकती हैं । और उसमें वह पुरुष से अधिक सफल हुई है। और इन्हीं बातों को महिला लेखिकाओं ने कथा - साहित्य में अभिव्यक्ति दी है,। कथा - साहित्य में वैविध्य की दृष्टि से उसे अधिक सफलता मिली है।

श्रीमती सुभद्राकुमारी चौहान ने प्रथम भारतीय कवि सम्मलेन में सभानेत्री के पद से इस विचार को इन शब्दों में प्रकट किया था -

"साहित्य के क्षेत्र में स्त्रियों का आना अत्यन्त आवश्यक है। स्त्रियों के सहयोग के बिना मानव साहित्य सम्पूर्ण नहीं हो सकता। एक पुरुष किसी पुरुष की हृदयानुभूति को सफलता पूर्वक प्रकट कर सकता है किन्तु जब वह स्त्रियों की अनुभूति को प्रकट करने जाता है, तब उसे विवश होकर कल्पना से ही काम लेना पड़ता है। उदा. सती की मनोभावना, वधु के उल्हास और माता के वात्सल्य का पुरुषोंद्वारा किया हुआ वर्णन सेकेंड हेन्ड ही रहेगा क्योंकि पुरुष इन उदात्त अवस्थाओंका अनुभव कर ही नहीं सकते।"३

[अ] महिलाओं की कहानियों में चित्रित नारी -

सुभद्राजी की कहानियों में आदर्शोन्मुख यथार्थ को स्थान मिला है। मानव - भावना और सामाजिक रूढ़ियों इन में संघर्ष मय वातावरण का निर्माण करते हुए उन्होंने समस्या समाधान का मर्यादा पूर्ण मार्ग का संकेत किया है। उन्होंने "होली", "मझली रानी", "आहुति", "किस्मत" "नारी - हृदय", "पवित्र ईर्ष्या," "ग्रामीणा", "वेश्या की पुत्री", आदि कहानियों में हिन्दू परिवारों में विवाहिता नारी कितनी दुखी और दीन है। इस बात का करुणपूर्ण चित्रण किया है। वह पति और सास के विरुध्द बातें नहीं कर सकती। किसी परपुरुष से स्वच्छ हृदय से बातें तक नहीं कर सकती। पति और सास की सेवा करके भी उपेक्षा और तिरस्कार सहती रहती है। इतना सब सहकर भी सुभद्राजी की विवाहिता, पात्राएँ घर और समाज के विरुध्द आवाज नहीं उठा पाती या विद्रोही रूप का प्रदर्शन नहीं करतीं वे मौन रहकर सब कुछ सहती रहती हैं और भारतीय संस्कृति का परिचय देती हैं। वे भारतीय संस्कृति की मर्यादा का उल्लघंन नहीं करतीं।

श्रीमती उषादेवी मित्रा ने अनेक उपन्यासों की तरह शताधिक कहानियों की रचना की है। उषादेवी की स्त्री - चरित्रों की प्रमुख विशेषता यह है कि वे विषम - परिस्थितियों में भी आत्मगौरव बनाये रखती है। "प्रश्न", "हृदय", "मैं प्यासी हूँ", "माँ", "सती", "नग्नसत्य" "आरती", "मन का यौवन", "ललिता की डायरी," "सुहाग की बिन्दी", "मन की देन" , "तो वह कौन थी," "नारी का दान" आदि कहानियों में लेखिकाने नारी को माता, पत्नी, पुत्री, बहन, वेश्या, नर्तकी,

रानी, दासी, विधवा, सधवा आदि विभिन्न रूपों में चित्रित किया है।[४]

किन्तु इन सभी रूपों में प्राय: वह परिस्थिती से मजबूर या प्रताडित है। प्राय: सभी कहानियों में उसने त्याग और आदर्श का परिचय दिया है। उनकी वेदना अन्तर्मुखी है। वे उसे व्यक्त नहीं कर पातीं, मन ही मन घुटती रहती हैं। वे अपनी अन्तर्मन में ही भावुक संवेदना को जगाती रहती हैं। उनकी भावनायें प्राय: करूणा, सहानुभूति, भावकुता,। तिरस्कृत - अनुभवों, विवशता प्रेरित आदर्शो के माध्यम से व्यक्त हुई हैं ।

श्रीमती कमला चौधरी बहुमुखी प्रतिभा संपन्न लेखिका हैं। अन्य पुरूष महिला लेखिकाओं की तरह ही हिन्दी कथा - साहित्य के विकास में उन्होंने महत्वपूर्ण योगदान दिया है,। उन्होंने नारीविषयक कहानियोंपर विशेष बल दिया है। उनकी नारीविषयक प्रमुख कहानियाँ निम्नलिखित हैं - "साधना का उन्माद", "वीणा", "मधुरिमा", "भीख मंगे की, बिटिया", "प्रायश्चित," "त्याग", "कन्यादान," "रूपा", "अपमान", "गीता", "कैलासदीदी", "कर्तव्य", "मेरी रानी", "अनाथालय," "मातृहिना", आदि ।[५]

"साधना का उन्माद" कहानी में प्रेम की अतृप्ति में छटपटाती नारी का मनोवैज्ञानिक रूप में चित्रण किया गया है। बचपन में ही माँ की मृत्यु के कारण साधना का हृदय स्नेहपिपासु ही रहा। और विवाह के बाद भी वह पति के प्यार से वंचित रही। वह कभी मन में सोचती कि विद्रोही रूप धारण कर ले किंतु भारतीय संस्कारों के कारण वह अपनी अशान्ति को पति तक पहुँचने नहीं देना चाहती। साधना के इसी उन्मादपूर्ण अन्तर्जगत का प्रस्तुत कहानी में चित्रण किया गया है। लेखिका की यह कहानी साहित्य साहित्य - जगत् में विशेष लोकप्रिय हुई। "मधुरिमा" में. मधुरिमा नामक एक भावुक और संवेदनाशील पात्रा की सृष्टि की गई है। "वीणा" में एक पतिवंचिता रमणी के मनोभावों का स्वाभाविक चित्रण किया गया है। "हार" की नायिका रमला, भाई को अपने विवाह के लिए चिंतित देखकर बिना कुछ सोचे समझे रंगपुर के विलासी जमींदार से विवाह के

लिए तैयार होती है। विवाह के उपरान्त पति की विलासी वृत्ति से तंग आकर फिर वह अपने भाई के पास लौट आती है। भाई की गृहस्थी को व्यवस्थित करने के उपरान्त रमला को अपने जीवन के अधूरेपन का एहसास होता है और जब पति दूसरा विवाह कर लेता है तब उसका पराजित नारी हृदय फफककर रो उठता है।

श्रीमती कमला चौधरी की अधिकांश कहानियाँ नायिकाप्रधान हैं। उनमें नारी जीवन की आकांक्षा, वेदना, ईर्ष्या, अतृप्ति, स्नेह, ममता, आशा, निराशा आदि परिस्थिति - प्रेरित चरित्रोंका चित्रण हुआ है॥ सुशिला, वीणा, करुणा, कैलासादीदी, सुधिया, उषा, कौशल्या, सरोज ललिता आदि पात्राएँ इसके प्रमाण हैं।

श्रीमती सुमित्राकुमारी सिनहा सन्" ६० के पूर्व काल की ख्यातिप्राप्त लेखिका हैं। श्रीमती सिनहा की प्रतिनिधि कहानियाँ वे हैं जिनमें नायिकाओं ने परपुरुष के प्रति वासना मूलक आकर्षण का अनुभव किया है॥ इसके पीछे का मूल कारण पतियोंका दुर्व्यवहार है। "नारी का सपना" की नायिका निशा। पति के शुष्क व्यवहार के कारण ही कवि तथा सहृदय आलोक की ओर आकर्षित होती है । इसीप्रकार "गृहलक्ष्मी" की माया भी पति की उपेक्षा से व्यथित होकर ही अनिच्छासे ही पड़ोसी युवक महेन्द्र की ओर झुकती है। अधिकांश कहानियों में नारी के कष्टों एवं पीड़ाओं का ही चित्रण हुआ है। "सकल नारीत्व" "पत्थर की देवी" तथा "भावुक" में पति के दुर्व्यवहार, उपेक्षा, मारपीट, गाली - गलौज आदि के के कारण नारी का विद्रोहीणी रूप दिखाया गया है। "शीला का पति" तथा "कुचला मातृत्व" में गरीबी और पति के सम्बन्धियों के दुर्व्यवहार की चक्की में पिसती हुई नारियों के कष्टों का चित्रण हुआ है॥६

सुमित्रा कुमारीजी ने अपनी कहानियों में जीवन की यथार्थता का प्रामाणिक चित्रण किया है। भारतीय परम्परा के कारण मर्यादा में जकड़ी हुई पति और समाज के अत्याचारों में पिसती हुई भारतीय नारी के अन्तर्मन में कितनी अशान्ति विद्रोह एवं कटुता भरी है - इसका मार्मिक चित्रण उनकी कहानियों में मिलता है। उनकी कहानियों मे प्रमुख रूप से नारी की समस्याओं एवं प्रतिक्रियाओं को ही स्थान प्राप्त हुआ है।

श्रीमती सत्यवती मल्लिक की अधिकांश कहानियाँ रेखाचित्रात्मक हैं । अबतक उनके चार कहानी - संग्रह प्रकाशित हुए हैं जो क्रमश: इसप्रकार हैं - दो फूल, वैशाख की रात, दिन - रात नारी - हृदय की साध।

सत्यवतीजी ने "आँसू", "दृष्टि", "अधेड़", "एक झलक", "दिन-रात", "नारी हृदय की साध", आदि अनेक कहानियों में नारी - हृदय की सरलता, भावुकता, करुणा, परिस्थितिजनित, व्यथा के मर्मस्पर्शी चित्र अंकित किए हैं। समाज के उपेक्षित पात्रों के प्रति लेखिकाने अपने हृदय की समस्त करुणा एवं संवेदना उँड़ेल दी है।

सत्यवतीजी की अधिकांश नायिकाएँ समाजद्वारा उपेक्षित एवं प्रताड़ित है। "आँसू", की अनाथ शोभा अत्याधिक उपेक्षा के माहोल में बड़ी हुई, और विवाह के बाद भरसक प्रेम करने पर भी पति ने उसका त्याग कर दिया। "दृष्टि" की नायिका कुरूप होने के कारण पति का प्यार नहीं पा सकी, पति ने उससे उत्पन्न पुत्री को एक मित्र के घर भेज दिया और स्वयं दूसरा विवाह कर लिया। "अधेड़" में एक दु:खी युनानी युवती की करुण जीवन गाथा का मार्मिक चित्रण है। "एक झलक" में एक पीड़िता वृध्दा का जीवनचरित्र है जिसने अनादर पाकर भी पति को स्नेह ही दिया। "जीवनसंध्या" की गंगा भी ऐसा व्यथा जन्य पात्र है। "कुल" की नायिका में भारतीय नारी की समस्त विवशता, करुणा और स्नेहिल भावना का करुणपूर्ण चित्रण है। इसप्रकार यह स्पष्ट है कि सत्यवतीजी ने नायिका प्रधान कहानियों मे समाज और घर से पीड़ित नारियों का करुणपूर्ण चित्रण प्रस्तुत किया है।[७]

प्रारंभकाल की लेखिकाओं ने जहाँ अनेक सामाजिक रूढियों का पोषण किया था, वहाँ इस काल की लेखिकाओं ने विधवा - विवाह, दहेज प्रथा, बाल - विवाह, स्त्री - शिक्षा का विरोध आदि कुरितीयों की निन्दा की है। इन प्रथाओं के विरुध्द इस युग की लेखिकाओं ने अनास्था व्यक्त की है। आदर्श की अपेक्षा यथार्थ - चित्रण की ओर विशेष ध्यान दिया है। समाज में विधवा की दुर्दशा, पुरुष वर्ग की दुराचारी प्रवृत्ति एवं कठोरता, पतियों की उपेक्षा, विवाहित नारियों की आत्मपीड़ा, प्रेम की सफलता और असफलता के परिणाम आदि इन कहानियों के प्रमुख विषय हैं । परिणामत:

अधिकांश कहानियाँ करुण एवं दु:खान्त रही हैं।

ज्यों - ज्यों समाज में स्त्रीशिक्षा का प्रसार होता गया, त्यों त्यों नारी की साहित्यिक रुचि बढ़ती गयी॥ प्रारंभकाल में एक बंगमहिला ही थीं जिनका साहित्यमें नामोल्लेख मिलता है। किन्तु विकासकाल में उषामित्रा, सुभद्राकुमारी चौहान, होमवतीदेवी, कमला चौधरी, सुमित्राकुमारी सिनहा, कंचनलता आदि अनेक महिलाओं ने हिंदी कथा साहित्य के विकास में महत्वपूर्ण हाथ बँटाया।

श्रीमती सुभद्राकुमारी चौहान ने काशी में हिन्दी साहित्य सम्मेलन के २८ वें अधिवेशन में महिला साहित्य सम्मेलन की अध्यक्षा के पद से कहा था - "अब हमें अपनी मनोभावनाओं की अभिव्यक्ति के लिए पुरुषों की लेखनी की आवश्यकता नहीं रह गई है - - - - - - स्त्री की स्वभाव सिध्द कोमलता पुरुषों के लिए यदि अप्राप्य नहीं तो दुष्प्राप्य अवश्य है, ठीक वैसे ही जैसे की पुरुष - सुलभ प्रखर भावनाएँ स्त्रियों के लिए दुष्प्राप्य हैं॥"[८]

इस युग की लेखिकाओं के द्वारा रचे गये। कथा - साहित्य का अध्ययन करने के बाद उपर्युक्त उक्ति सत्य प्रतीत होती है ॥ सामान्य रूप से इन कहानियों में निम्नलिखित प्रवृत्तियों के दर्शन होते हैं - पारिवारिक जीवन की झाँकियाँ, प्रताड़ित नारियों की विवशता और विद्रोही रूप, विधवा विवाह और दहेजप्रथा का निषेध, विवाहित नारी की अनेक समस्याएँ अर्थात सास - ससुर की दुर्व्यवहार, पतिद्वारा उपेक्षा - तिरस्कार, सपत्नीकी समस्या आदी।

आ. पुरुष कहानिकारों की कहानियों में चित्रित नारी

इस काल के प्रमुख कहानीकार निम्नलिखित हैं - इलाचन्द जोशी, अज्ञेय, अश्क, यशपाल, बेनीपुरी, अमृतलाल नागर, अमृतराय, रांगेय राघव, और विष्णुप्रभाकर आदि। इन कहानीकारों ने भी हिंदी कथा साहित्य के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इसमें से कुछ ने पूर्वयुगीन विचारधारा को प्रस्तुत किया है । तो कुछ ने नवीन दृष्टीकोन प्रस्तुत किया हैं।

इनकी कहानियाँ वैचारिकता तथा कलात्मकता की दृष्टि से महत्वपूर्ण है ही साथ ही यथार्थ परकता की दृष्टि से भी अंत्यत महत्वपूर्ण हैं।

नारी की समस्या में इन्होंने यथार्थवादी दृष्टि का परिचय दिया है। मानव - जाति का आधा - हिस्सा - नारी, सदा से पीड़ित शोषित रहा है। नारी पर पुरुष ने हमेशा अत्याचार किए हैं। धर्म तथा रूढि के नामपर उसे उसे हमेशा दासी का रूप दिया गया है। परिणामत: वह दुर्बल और अधिकारहीन हो गयी।

नारी को हमेशा, वासना की मूर्ति माना गया है। उसकी कमजोरी का फायदा उठाकर उसे हर समय लूटा गया है। यशपाल की "चकाबू का किला" बेनीपुरी की "मालिनी के तटपर", "सीता और द्रौपदी" "रांगेय राघव की "अँगारे" न बुझें" आदि कहानियों में नारी पर किए गय अत्याचारों का चित्रण मिलता है। इसके साथ ही विष्णु प्रभाकर के "बच्चा माँ का था" "भारत माता की जय" रांगेय राघव की "दया के ठिकाने", "आकर्षण" आदि कहानियों में नारी के अत्याचारों का चित्रण, दिखायी देता है। पहाड़ो और देहातों में रहनेवाली अशिक्षित, परम्परा में जकड़ी हुई नारी समस्त शापों से युक्त जीवन जीने के लिए विवश है।

नारी की प्रमुख समस्या में परित्यक्ता नारी की समस्या का चित्रण भी इस युग के लेखकों ने बहुत ही मार्मिक दृष्टि से किया है। नारी की पारिवारिक निर्धनता, आश्रयहीन अवस्था, पुरुष जातिय की सन्देह वृत्ति, नारी की पूर्ण पेम की अपेक्षा, पति के अत्याचार एवं समाज की रूढ़ियाँ आदि कारणों से नारी को मजबूर होकर पति का घर छोड़ना पड़ा है।

यशपाल की "मंगला" कहानी परित्यक्ता अश्रयहीन नारी की दुर्दशा का करुण चित्र प्रस्तुत करती है। विष्णु प्रभाकर की नि:सन्तान नारी "स्वप्नमयी" कहानी में चित्रित है। सास और समाज उसके बांझ होने के कारण उसपर अत्याचार करता रहता है।[१]

इस युग के कहानीकारों ने नारी की विवाह समस्या को विविध रूपों मे चित्रित किया है। अनमेल - विवाह इसमें से एक प्रमुख समस्या है। अनमेल - विवाह एक सामाजिक समस्या है। पुरुष हमेशा नारी की ओर वासना की दृष्टि से देखता आया है। पुरुष स्वयं चाहे जितना भी बूढा हो अथवा पहले विवाह हो चुके हो तो भी नई नारी को जब चाहेगा तब जवान नारी को ही चाहेगा॥ परिस्थितियों से मजबूर होकर कभी युवती के माता पिता उसे बूढ़े के हाथ में सौंपने के लिए मजबूर होते हैं तो कभी पैसों के लालच से वह बूढ़े के हाथ पकडती है, तो कभी नारी स्वयं अपनी पारिवारिक एवं व्यक्तिगत लाचारी से अनमेल विवाह के लिए तैयार होती है। अश्क की "अंकुर" और इलाचन्द जोशी की "चौथे विवाह की पत्नी" आदि कहानियों में इस समस्या का चित्रण किया गया है।

वैधव्य नारी का सबसे बड़ा कलंक है। नारी की पारिवारिक लाचारी का फायदा उठाकर उसे अयोग्य व्यक्ति के गले बाँध दिया जाता है। परिणामत: उसे वैधव्य का जीवन जीना पड़ता है॥ अमृतराय की "सती का शाप" कहानी इस दृष्टि से महत्वपूर्ण है। नारी की व्यथा, दयनीयता का उपहास एवं समाज की कठोरता और निर्दयता पर व्यंग्य इस कहानी में चित्रित हैं। यशपाल की "दर्पण", "भगवान का खेल," "वान हिण्डनबर्ग," -"गौ माता" आदि कहानियों में समाज की विधवा की ओर देखने की संदेहवादी दृष्टि और नारी - प्रेम की गम्भीरता उसकी छटपटाहट और विकलता के विविध चित्र प्राप्त होते हैं। रांगेय राघव की "पिसनहारी" अमृतराय की "लोग", "बाँगर चोर" विष्णुप्रभाकर की "दूसरा वर" आदि कहानियों में ग्राम की विधवा के विविध चित्र प्राप्त होते हैं॥[१०]

वेश्या - नारी का चित्रण भी इस काल के कहानीकारों ने नारी समस्या के प्रमुख समस्या के रूप में चित्रित किया है। यशपाल की "कोकला डकैत," बेनीपुरी की "वेश्या बनाम सती", यशपाल की "उपदेश", "दुखी-सुखी", "भाग्यचक्र", आदि कहानियों में गरीबी, पुरुष की वासनामयता, अकर्मण्यता के कारण नारियों को वेश्या बनना पड़ा है॥ आर्थिक दुर्बलता नारी को इस व्यवसाय में खींच लाती है। वेश्या - समस्या सामाजिक संघटन की

कुव्यवस्था की ज्वलंत प्रमाण है। यशपाल ने नारी की विवशता को इन शब्दोंमें चित्रित किया है - "यह लड़की है, ननद के चार बच्चे हैं ॥ हम लोग क्या करें ? इस बदन के सिवाय हम लोगों के पास है क्या - - - - - - - - - ?"११ इस प्रकार स्पष्ट है कि नारी को मजबूर होकर ही इस मार्ग को स्वीकारना पड़ता है। और इसका यथार्थ चित्रण इन लेखकों ने किया है।

नारी की मातृत्व - समस्या भी इस काल के कहानीकारों का प्रमुख विषय रहा है। नारी जीवन की सार्थकता मातृत्व में ही है और उसके दुर्बल पक्ष का संभवत: यही कारण है॥ अपनी संतान के पालनपोषण के लिए वह सदा ही पति, प्रेमी, परिवार तथा परम्परा के नीचे पिसती आयी है। पुरुष की दृष्टि में नारी भले ही भोग की वस्तु रही हो किन्तु नारी हमेशा मातृत्व की ही भूखी रही है। इस दृष्टि से रांगेय राघव की "धर्म - संकट" कहानी में नारी के मातृपक्ष की महत्ता को पाया जा सकता है। कई बार नारी आपनी संतान के पालन में जब असफल हो जाती है तब अपनी संतान को या तो जन्म से पहले या बाद में नष्टकर देती है॥ विष्णु प्रभाकर की "भारत माता की जय" कहानी में इसका चित्रण मिलता है॥ यशपाल की "चित्र का शीर्षक" रांगेय राघव की "बच्चा" विष्णु प्रभाकर की "अभाव", "डायन" अश्क की "बेबसी" आदि कहानियों की नारियाँ भी मातृत्व की भावना से ही कुंठित हैं।

यशपाल, अश्क आदि की कहानियों में नारी की मातृत्व की भावना की तड़प और उसमें उसकी घुटनता का चित्रण किया है। इस काल के अन्य प्रमुख कहानी कारों ने अभावग्रस्त नारी की व्यथा, पीड़ा और कृत्रिम मार्गों के स्वीकार को अभिव्यक्त किया है। नारी की मौन व्यथा को चित्रित करना इनाक प्रमुख उद्देश्य है।

नारी में नवचेतना और विद्रोह की स्थिति का चित्रण :-

भारत के सुधारवादी आन्दोलन, नारी - शिक्षा का प्रसार, पाश्चात्यों का प्रभाव आदि कारणों से भारतीय नारी जो परम्परा में बद्द थी वह विद्रोही रूप का परिचय देने लगी। इन बदलते हुए नारी के रूपोंका

चित्रण स्वातंत्र्योत्तर कहानीकारों ने अत्यंत प्रभावशाली ढंग से किया गया है । पिछली पीढ़ी की नारी इतनी स्वतंत्र नहीं थी ॥ किन्तु इस काल की नारी ने अपनी स्वतंत्रता की माँग की ॥ विवाह के लिए वह अपने पसंद का वर चुनेगी । विष्णु प्रभाकर की "युगान्तर" "राखी" आदि में इसका चित्रण मिलता है। वह कठोर और अत्याचारी पति के व्यवहार का डटकर सामना करना चाहती है वे उसे मूक रूप से सहना नहीं चाहती। विष्णु प्रभाकर की "कैक्टस के फूल", "भीगी पलके" बेनीपुरी की "तीर देती जा रहके" विष्णुजीकी "अन्तर्वेदना" रांगेय राघव की "लहू और लोहा" आदि कहानियों में नारी के इस सबल रूप के दर्शन होते हैं।१२

उपर्युक्त विवेचन के आधारपर कहा जा सकता है कि स्वातंत्र्योत्तर काल और सन्" ६० से पूर्व लेखकों ने नारी की प्रमुख समस्याओं का चित्रण करने का प्रयास किया है। यशपालजी ने नारी को परम्पराह एवं आदर्श से अलग उसके सामाजिक, आर्थिक एवं पारिवारिक क्षेत्र को देखते हुए उसके जीवन संघर्ष को भौतिक आधारपर चित्रित किया है। नारी की आर्थिक दासता एवं सामाजिक बन्धनों से मुक्त करने की कामना यशपालजी की कहानियों में दिखाई देती है॥ अमृतराय, रांगेय राघव आदि कहानीकारों की कहानियों में भी यही दृष्टिकोण दिखायी देता है॥ बेनीपुरी जी नारी को पूर्ण मुक्ति और सम्मान की भावना से चित्रित करना चाहते हैं। इलाचन्द जोशी ने नारी का मनोविश्लेषणात्मक रूप में चित्रण किया है।

** २. साठोत्तरी कहानियों में चित्रित नारी :-

सन्" ६० के बाद लिखी गयी कहानी के स्वरूप की चर्चा करते हुए युवा कहानीकार रवीन्द्र कालिया ने आधुनिक कहानी के स्वरूप तथा उससे जुड़ी हुई रचनात्मक पीढ़ी के बारेमें लिखा है - "वास्तवमें सन"६० के बाद के कहानीकारों की पीढ़ी वह युवा पीढ़ी है जिसने बहुत कम समय के लिए परतंत्र भारत को देखा जिसका पालन - पोषण। और विकास स्वतंत्र भारत में हुआ। इसके पूर्व की यह पीढ़ी स्वतन्त्रता के सही अर्थ को या मूल्य को पहचान पाती उसने आपने चारों ओर भ्रष्टाचार, जातिवाद, भाई - भतीजावाद, प्रान्तीय संकीर्णताओं,

गुटबन्दी, बेरोजगारी, नौकरशाही के दूषित परिणाम ही देखे और अपने को बीस तरह के निषेधों से घिरा पाया। उसे यह सुनकर हैरानी हुई कि इससे पूर्व एक "पुन जागरण" भी हो चुका है। उसने पाया कि विवेक और व्यवहार, कार्य और कारण, अपराध और सजा, शब्द और अर्थ की पारस्परिक सम्बन्ध निरन्तर ही टूटता जा रहा है। जीवन प्राण शक्ति से हीन होता जा रहा है, यथार्थ अयथार्थ का भ्रम देने लगा। शब्द केवल ध्वनि बनकर रह गये हैं।"[१३]

सन्" ६० के बाद की कहानियों को अगर देखा जाया तो इस काल की कहानीकारों ने अनुभव की प्रामाणिकता पर ही अधिक बल दिया है। उसमें न भूत और न भविष्य का चित्रण है। इसीलिए उसमें कुतूहल भी नहीं है। इन कहानियों में सिर्फ अनुभूति का प्रामाणिक चित्रण किया है। किसी एक वाक्य, किसी एक घटना, किसी एक चरित्र से उसका जानबूझकर रचनात्मक संघटन नही किया गया है। इसलिए वह अपने आप पूर्ण रूपमें सार्थक है, उसका एक - एक रेशा प्रामाणिक और महत्वपूर्ण लगता है।

साठोत्तरी कहानियों में मुख्य रूप से पुरुष और महिला कहानीकार निम्नलिखित हैं -

शशीप्रभा शास्त्री, मेहरुन्निसा परवेज, शिवानी, कृष्णा सोबती, निरूपमा सेवती, कृष्णा अग्निहोत्री, मणिका मोहिनी, मृदुला गर्ग, प्रतीमा वर्मा, सूर्यबाला, सिमी हर्षिता, नमिता सिंह, ममता कालिया, राजी सेठ, मन्नू भण्डारी, उषा प्रियवंदा, मालती जोशी, चित्रा मुद्गल दीप्ति खंडेलवाल, मृणाल पांडे, सुधा अरोड़ा, सुनीता जैन, सोभा वीरा, अणिमा सिंह, राजेन्द्र यादव, मोहन राकेश, अमरकांत महीपसिंह, ज्ञानरंजन, कमलेश्वर, रमेश बत्तरा, शेखर जोशी, रवींद्र कालिया, कृष्णबलदेव वैद, निर्मला वर्मा, भैरवप्रसाद गुप्त, भीमसेन त्यागी, रमेश उपाध्याय, सुदर्शन चोपड़ा राजेन्द्र अवस्थी, विजय चौहान, नरेश मेहता श्रीकान्त वर्मा, धीरेन्द्र आस्थाना, सुरेश उनियाल राजकुमार गौतम आदि प्रमुख कहानीकार हैं।

समय और हालात संदर्भों को बदल देते हैं । आज नारी का जो बदला हुआ रूप साहित्य में दिखायी देता है उसकी कल्पनातक पूर्व पीढ़ी के लेखकों ने नहीं की होगी। समाज और जीवन के बदलते हुए रूपों ने ही नारी को बदला है। आज नारी अपनी समस्याओं में घुटते रहने के अलावा, अपनी विवशताओं को झटक देने में नहीं हिचकिचाती। इसलिए आज स्त्री - पुरुष के बीच के प्रसंग न ही काल्पनिक लगते हैं और न ही विशिष्टताओं में जकड़े हुए। उनमें बेमतलब हाय - हाय भी नहीं है। स्थिरता है, बुध्दि सम्मत तर्क - वितर्क है, और किंचित आतंक भी है।

महिला कथाकारों की कहानियाँ तो इस दृष्टि से विशेष महत्वपूर्ण हैं। अबतक की कहानी नारी - जीवन को पुरुष की दृष्टि से ही देखती आयी थी किंतु सन् " ६० के बाद प्रथम बार नारी ने नारी - मन की गहराई को पकड़ा और उसे स्पष्ट रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास किया। और कहानी में एक नये सत्य को उजागर करने का प्रयास किया। इन कहानी लेखिकाओं ने पुरुष और स्त्री के आचरण के भेद को चुनौती देते हुए अपनी स्वतंत्र, तर्कसंगत विवेकशीलता का परिचय दिया। विवाह, प्रेम, यौन कामकाजी महिलाओं की स्थिति घर - बार की समस्याओं आदि पर बड़ी खुली दृष्टि से अत्यंत विश्वास के साथ महिला लेखिकाओं ने लिखा है।

* नारी में व्यक्ति स्वातंत्र्य की छटपटाहट :-

नये आर्थिक वर्गों के निर्माण के साथ - साथ, परिवार के ढाँचे तथा स्वरूप भी, परिवर्तित हुए। स्त्री स्वतन्त्रता के कारण नारी हर क्षेत्र में पुरुषों की बराबरी की हिस्सेदार होने लगी तो नौकरी पेशा स्त्री की परिवार में परम्परागत ढंग की स्थिति नहीं रही । जब घरमें स्त्री और पुरुष अर्थात् विवाहित दम्पति नौकरी करने लगे तो दोनो की मानसिक स्थितियों में व्यापक परिवर्तन आने लगा। आर्थिक दृष्टि से नारी स्वतंत्र होने के कारण उसमें अपने अस्तित्व के प्रति नयी चेतना जागी और उसका अहं भी समर्पित होने लगा। अब वह भारतीय परम्परा में बध्द, घर और संसार में ही जकड़ी नहीं रही। वह सास और पति की सेवा करते हुए उनके ही इशारोंपर नाचनेवाली स्त्री नहीं रही। आर्थिक स्तर पर समृध्द

होने के कारण उसने एक स्वतंत्र व्यक्ति के अधिकारों की इच्छा व्यक्त की और उसी प्रकार अपनी कल्पना के अनुसार सजाने की कोशिश की ।

स्वातंत्र्योत्तर नारी के इस नये रूप को लेकर नये कहानीकारों ने अनेक कहानियाँ लिखीं, जिनमें पारिवारिक विघटन से लेकर नारी के इस नये अहंपोषित स्वरूप तक का चित्रण किया गया है। निर्मल वर्मा की "परिन्दे", "तीसरा गवाह", "माया दर्पण", "डायरी का खेल", मोहन राकेश की "एक और जिन्दगी" कमलेश्वर की "कमरा और गली" मन्नू भण्डारी की "क्षय", "एखाने आकाश नाई" राजेन्द्र यादव की "प्रतीक्षा" मन्नु भण्डारी की "नई नौकरी" उषा प्रियवंदा की "वापसी", "मछलियाँ" शानी की "एक नाव के यात्री", "एक सन्धि" कृष्णा सोबती की "बादलों के घेरे" महीपसिंह की "सीधी रेखाओं का वृत्त" ज्ञानरंजन की "पिता," "सम्बन्ध" और "शेष होते हुए" मेहरुन्निसा परवेज की "साल की पहली रात" और चित्रा मुद्गल की "बावजूद इसके" आदि कहानियों में नारी - स्वातंत्र्य की छटपटाहट या आधुनिक अस्तित्व बोध के प्रति अलग नारी का अत्यन्त स्वाभाविक चित्रण मिलता है।[१४]

* नौकरी पेशा नारी का चित्रण :-

आधुनिक सामाजिक परिदृश्य में नारी की स्थिति में जो बदलाव आया है उसका महत्वपूर्ण कारण यह है कि वह पुरुष के समान ही जीवन के हर क्षेत्र में कार्यरत होने का प्रयत्न कर रही है और उसमें वह काफी मात्रा तक सफल भी हो रही है। घर की चार - दिवारी छोड़कर पुरुष के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलने की प्रवृत्ति से नारी की मानसिक स्थिति, व्यक्तिगत - स्वतंत्रता, प्रेम आदि के संबंध में बहुत भारी परिवर्तन तो हुआ ही है किन्तु ये सब करते हुए उसे भीतर और बाहर से बहुत - बहुत टूटना भी पड़ा है। सुबह से शामतक नौकरी की किट - किट में सरकपकर जब वह घर लौटती है तो उसे अनेक पारिवारिक कर्तव्योंको निभाना पड़ता है। पति से लेकर बच्चे तक माँ - बाप, भाई - बहन, सास - ससुर, ननद - देवर

सबी सभी को उससे अतिरिक्त अपेक्षाएँ हैं, किन्तु उसकी अपेक्षाओं की ओर ध्यान देनेवाला कोई विरला ही मिलेगा। घर और ऑफीस या काम की अन्य जगहों में उसे विभिन्न प्रकार के जो मानसिक तनाव सहन करने पडते है, भावात्मक और संवदेनात्मक स्तर पर जो मानसिक संघर्ष झेलना पड़ता है, उसे सन्"६० के बाद की कहानियों में बड़ी मार्मिकता से चित्रित किया गया है।

उषा प्रियवंदा की कहानी "संबंध" के पूर्वार्द्ध में उस लड़की की वेदना चित्रित हुई है जो परिवार को पालने और चलाने के लिए बहुत टूट जाती है, चुक जाती है॥ [१५] मन्नू भण्डारी की "ए खाने आकाश नाइ" [१६] की सुषमा सोचती रह जाती है कि घर थोड़ा जम जाये तो वह अपने लिए कुछ सोचेगी और जब वह अपने लिए, उपयुक्त साथी पाकर विवाह की घोषणा घर में करती है तो घर में कुहराम मच जाता है॥ विवाह के बाद भी पति के घर को सुखी करने के लिए वह दिन - रात दौड़ती है घर के लोगों की अपेक्षाएँ पूर्ण करने का भरसक प्रयत्न करती ह रहती है। और उस कोशिश में वह भीतर तक टूट जाती है। वह सुख के जिस आकाश की छांह जीवन के प्रारंभ से खोज रही थी, वह इसे कहीं भी तो नहीं मिल पाती। सुषमा का यह दर्द भारतीय परिवार की अनेक नौकरी पेशा नारियों का दर्द है।

इसीप्रकार राजी सेठ की कहानी "योग - दीक्षा" में उस नौकरीपेशा लड़की का दर्द चित्रित हुआ है जो परिवार की आर्थिक दुर्बलता के कारण स्वयं को रातदिन यंत्रणा की चक्की में पीस रही है। नौकरीपेशा नारी को भारतीय पुरुष - प्रधान समाज में पुरुष की वासनात्मक दृष्टि, व्यंग्य - बाणों का वर्षाव, आदि को हँसते-हँसते झेलना पड़ता है। "सब में से एक," "बध्दमुष्टि", "तलफ्लाहट", "माँ यह नौकरी छोड़ दो" आदि निरुपमा सेवती की अत्यंत संवेदनशील कहानियाँ हैं जो कामकाजी नारी के प्रामाणिक दर्द को चित्रित करती हैं। मालती जोशी ने कामकाजी नारी का घर और बाहर के जीवन का तनाव विभिन्न दृष्टि और सूक्ष्मता से चित्रित किया है। इस विषय में लिखी गयी उनकी कहानी "मध्यांतर" बहुत ही श्रेष्ठ और सशक्त कहानी कही जा सकती है। उसमें इन्होंने

कामकाजी नारी के मानसिक - द्वंद्व को चित्रित किया है। महीपसिंह की "घिरे हुए क्षण" में नौकरीपेशा दंपती के मानसिक तनावों को एक नयी दृष्टिकोण से चित्रित किया है। इसीप्रकार मोहन राकेश की "काला रोजगार" मन्नू भण्डारी की "रानी माँ का चबूतरा" धर्मवीर भारती की "कुलटा" आदि कहानियों में नौकरी पेशा नारी की संत्रस्त मनः:स्थिति, उसके भावात्मक संघर्ष, नौकरी की व्यवस्था के तंत्र में पिसने की लाचारी आदि विविधमुखी समस्याओं को बड़ी प्रामाणिकता से संदर्भित किया गया है।[१७]

** वेश्या नारी का चित्रण :-

भारतीय जनजीवन पर वेश्या समस्या एक बहुत बड़ा कलंक है। नारी को इस कदर अपमान एवं घृणायुक्त जीवन बिताना पड़ता है। पशु से भी गया बीता जीवन जीने को मजबूर कर देनेवाली पुरुष की इस दुनिया में वेश्यापन एक दाग है॥ नारी की आर्थिक दुर्बलता उसे इस मार्ग की ओर ले आती है॥ वेश्या का अनिश्चित भविष्य, शारीरिक दुर्गति एवं मानसिक टूटन उसके जीवन के अभिशाप है॥ हिन्दी के प्राय: सभी कहानीकारों ने इस समस्या का चित्रण बहुत ही मार्मिक और प्रभावशाली ढंग से किया है।

नये कहानीकारों ने इस समस्या को पुरातन ढंग से चित्रित करने के अलावा उसके कारणों को, उसके आधारभूत स्वरूप को समझाना चाहा जिसके कारण कोई भी इसप्रकार का पेशा अपनाने को मजबूर होती है। यह सत्य है कि कोई भी स्त्री, मजबूरी के कारण इसमें घसीटती है। नये कहानीकारों ने इसलिए इस बात पर अधिक बल दिया कि मूल मनोवृत्ति को ही समाज से नष्ट किया जाय जिसके कारण ये सामाजिक समस्या उत्पन्न हुई। मोहन राकेश की "मिस पाल", राजेन्द्र यादव की "प्रतीक्षा", "जहाँ लक्ष्मी कैद है", "कुतीया" मन्नू भण्डारी की "यही सच है", "क्षय" रघुवीर सहाय की "प्रेमिका", मेरे और नंगी औरत के बीच", राजकमल चौधरी की "दाम्पत्य", "मछली जाल", "जलते हुए मकान में कुछ लोग", "एक काली दो काली तीन काली", सुदर्शन चोपड़ा की "स्वीकारान्त", -"बदरंग" कमलेश्वर की "मांस का दरियाँ" और "रातें" भीष्म सहानी की "अभी तो मैं जवान हूँ[१८] आदि कहानियों में स्त्री की इस समस्या का

सचित्र ढंग से चित्रण हुआ है । इन कहानियों में वेश्या जीवन की घिनौनी अवस्था, यह सोचने को विवश करती है कि यह समस्या समस्त समाज और नारी पर लगा कलंक है ।

वेश्या चित्रण के अतिरिक्त नये कहानीकारों ने उस समस्या का भी चित्रण किया है जिसके कारण कोई अपनी पत्नी, पुत्री या बहन को शरीर का "धंदा" करने के लिए मजबूर करता है, भले ही उसे कॉल - गर्ल जैसे आधुनिक नाम दे दिये जायें । सुरेश सेठ की "धंधा" कहानी में पैसों के कारण मजबूर बाप अपनी बेटी राधा को शरीर का "धंदा" करते देखकर भी मौन व्रत लेता है । इसी प्रकार अकाल की आर्थिक मजबूरियों में घिरा "इतने अच्छे दिन" [कमलेश्वर] का भाई कमली को शरीर का धंदा करते देखकर भी मौन है॥ अकुलेश परिहार की "एक बदचलन लड़की" कहानी भी उन सामाजिक स्थितियों को प्रकाशित करती है। जिन्होंने पढ़ी - लिखी लड़की को शरीर का व्यापार करने के मार्ग पर खड़ा कर दिया है । इसप्रकार आधुनिक कहानियों में उन सामाजिक स्थितियों पर विचार किया गया है, जिन्होंने नारी को वेश्या-जीवन कॉलगर्ल का पेशा या अन्य रूपों में शरीर का व्यापार करने को बाध्य किया है॥१९

विवाह समस्या में चित्रित नारी :-

सन्" ६० के बाद महिला कहानीकारों की कहानियों में नारी - विवाह - समस्या को एक नयी दृष्टि से चित्रित किया है। इस काल की लेखिकाओं ने नारी को विवाह के प्रति भावुक और संवेदनशील दृष्टि से देखने के अलावा विवाह संस्था की ओर एक विद्रोहपूर्ण दृष्टि से देखा है। युग - युग से नारी को विवाह के पवित्र बंधन के नाम पर शोषित रखा गया है । नये कहानीकारों ने विवाह और मातृत्व की ओर भावात्मक दृष्टि से देखने के अलावा एक आक्रोशपूर्ण दृष्टि से देखा गया है ॥

उषा प्रियवंदा की "प्रतिध्वनियाँ" की नायिका तलाक लेने के बाद एक मुक्ति का अहसास जगाती है। ममता कालिया की कहानी "किशोरी मन की साध" में लड़की का बार - बार फेल होना विवाह का कारण है । क्योंकि पास होते ही उसकी शादी कर दी जायेगी। मृदुला गर्ग की कहानी

"तुक" और "एक और विवाह" की नायिकायें व्यस्थित विवाह में विश्वास नहीं करती। निरुपमा सेवती की दृष्टि में विवाह व्यक्तित्व का हनन है। आज की नारी के विवाह संबंधी विचार पिछली पीढ़ी की नारी से किसप्रकार भिन्न हुए हैं इसका भी बहुत प्रभावी वर्णन कुछ कहानियों में प्राप्त होता है। इस दृष्टि से दीप्ति खण्डेलवाल की "निर्बंध", "वह" तथा मेहरुन्निसा परवेज की "कयामत आ गयी है" कहानियाँ महत्वपूर्ण हैं। परवेज की "कयामत आ गयी है।" में माँ और बेटी की पीढ़ी में विवाह-विषयक बदलाव का चित्रण है। "निर्बंध" में तीन पीढ़ियों के विवाह - संबंधी दृष्टिगत बदलाव को पुत्री, उसकी माँ तथा नानी की पीढ़ियो के बीच विश्लेषित करके देखा गया है। मणिका मोहिनी की "ढाई अक्षर प्रेम का" में भी "पति को बड़ी बकवास चीज", बताते हुए विवाह संस्था को अस्वीकार किया गया है।[२०]

नारी की विवाह की ओर देखने की दृष्टिका चरम लक्ष्य मातृत्व था। किंतु आज नारी बच्चों की किच - किच से तंग नजर आती है, मानो वह मातृत्व को एक बोझ महसूस कर रही है। इसका भी चित्रण कुछ कहानियों में मिलता है। निरुपमा सेवती की "तल्फलाह" की नारी भी मातृत्व को एक बोझ समझती है। सिम्मी हर्षिता की "चक्रभोग" मणिका की "ढाई आखर प्रेम का" आदि कहानियों में चित्रित नारी मातृत्व को बोझ समझती ही है साथ - ही - साथ तलाक में बच्चों को पति द्वारा छीन लेने से बहुतही मुक्त अनुभव करती है। विवाह, प्रेम, पति के प्रति एकनिष्ठता, मातृत्व की तीव्र इच्छा आदि के प्रति आज की नारी की बदली दृष्टि को सन्"६० के बाद की कहानियों में अनेक कोणों से चित्रित कर दिया गया है। वास्तविकता तो यह है कि नारी की इस बदली हुई दृष्टि का प्रमुख कारण नारी की स्वतंत्र जीवन जीने की कामना है।

* तलाक में चित्रित नारी -

भारतीय नारी का यह रोना है कि दाम्पत्य संबंधों में अगर कटुता आ गई और तलाक हो गया तो भी वह संतोष से जी नहीं सकती। तलाक लेकर भी वह पुरानी यादों में घुटती रहती हैं। मन्नू भंडारी की

"बंद दराजों के साथ" में नारी मन की इस घुटनशीलता का प्रामाणिक चित्रण किया गया है । पतिपत्नी के बीच शक के कारण अलगाव आ जाता है और तलाक की स्थिति उत्पन्न होती है ॥ तलाक लेने के बाद नायिका अन्य प्रेमी का सहारा लेती है ॥ किंतु प्रेमी के साथ भी वहीं स्थिति निर्माण होती है । कुएँ से निकलकर खाई में गिरने पीड़ा को बहुत ही मार्मिक ढंग से चित्रित किया गया है । विजय चौहान की कहानी "तलाक" में भारतीय नारी की मनः स्थिति का अच्छीतरह से चित्रण किया गया है॥ कहानी की नायिका ने स्वयं अपने पति से तलाक ली है किन्तु जब उसे पता चलता है कि विदेश में उसका पति दूसरा ब्याह कर रहा है तो वह अपने वकील से कहती है कि उसे विवाह करने से रोकें.। इसके पीछे की मूल परिस्थिति यह है कि भारतीय नारी पति से अलग होकर जी ही नहीं सकती। अगर वह निर्दयता पूर्वक अलग हो भी गयी तो पति के हर कार्य की ओर उसका ध्यान रहता है ॥ इस तरह तलाक के बाद भी भारतीय नारी स्वस्थ रूपसे जी नहीं सकती । महीपसिंह की "घिराव" दिनेश पालीवाल की "अनबीता अतीत" की भी यही समस्या है। इसी नारी समस्या को लेकर लिखी गयी मणिका मोहिनी की "पास ने कहा था" सूर्यबाला की "गुमनाम दायरें" ध्रुव जायसवाल की "दूसरा युध्द शिबिर" आदि कहानियों में नारी मन के इसी द्वंद्व को चित्रित किया गया है। किंतु निरुपमा सेवतीजी ने इस समस्या को अलग दृष्टि से चित्रित किया है । उनकी कहानी के पति - पत्नी तलाक लेकर उसमें अस्वस्थ नहीं होते बल्कि तलाकशुदा पति - पत्नी बिल्कुल सामान्य होकर केवल शारिरिक स्तर पर ही ही मिलते है और इसका चित्रण "सुनहरे देवदार" कहानी में चित्रित है ।

* दाम्पत्य - संबंध में चित्रित नारी :-

आधुनिक जीवन - स्थितियों की एक बहुत बड़ी समस्या यह है कि पति - पत्नी के बीच संबंधों में एक अलगाव की स्थिति आ रही है । आज विभिन्न सामाजिक, आर्थिक और भावात्मक कारणों से पति - पत्नी के संबंध नाजुक और तनाव पूर्ण हो गये है॥ इसका चित्रण पुरुष लेखकों की अपेक्षा नारी लेखिकाओं ने अत्यंत सूक्ष्मता से किया है। इसका कारण यह

है कि पुरुष केवल अपनी दृष्टि से इस समस्या की ओर देखते है किंतु दाम्पत्य जीवन में नारी को कितना कुछ मौन रहकर सहना पड़ा है और सहना पड़ता है उसे पीड़ा को नारी - मन ही समझ सकता है इसलिए लेखिकाओं ने ही इस समस्या को चित्रित करने में अत्यधिक सफलता प्राप्त की है। आधुनिक नारी व्यक्ति - स्वतंत्रता की माँग के कारण घर के बाहर आ गयी है। शिक्षा और उससे प्राप्त नौकरी के कारण वह घर के किसी व्यक्ति के अन्याय को सह नहीं सकती। चाहे वह पति हो अथवा अन्य कोई ।

पति - पत्नी के संबंधो में दूरियाँ, अपूर्णता, रिक्तता - बोध और एकाकीपन के कारण अनेक वैवाहिक संबंधों को खोकला बना दिया है । नारी इसमें ही अपने को अपने अस्तित्व को कायम रखने के लिए दौड़ रही है। जिसमें उसको कई बार टूटना पड़ता है । दीप्ति खंडेलवाल की "कड़वे सच" और "धूप के अहसास" संग्रहो की कहानियों में इसी नारी मन: स्थिती का चित्रण मिलता है। "क्षितिज" , "शेष - अशेष", "एक पासे पुरवैया", "देह की सीता", "ये भी कोई बीत है" , "झोंका" [वह" आदि दीप्ति की कहानियोंमें सच्चे दांपत्य सुख के लिए नारी कितनी तड़प रही है, तरस रही है इसका प्रामाणिक चित्रण किया गया है। पति - पत्नी के मिलन क्षणों में भी नारी किस प्रकार अपने आपको एक रिक्ततापूर्ण पाती है इसका भी चित्रण इन कहानियों में दिखायी देता है ।

पति - पत्नी के दाम्पत्य सुख में अलगाव का एक बहुत बड़ा कारण तीसरे की उपस्थिति का शक है । पुरुष और महिला दोनों कथाकारों ने इस प्रवृत्ति पर व्यंग्य किया है । ममता कालिया की कहानी "सीट नम्बर छह", "पीली छ लड़की" मणिका मोहिनी की "सबसे अलग" गंगाप्रसाद विमल की "सिध्दार्थ का लौटना" दूधनाथ सिंह की "दिनचर्या" आदि कहानियों में इसका चित्रण मिलता है। दीप्ति खंडेलवाल की कहानियों में चित्रित नारी किसप्रकार प्रति के प्रेम के लिए तड़पती है । उसीप्रकार मन्नू भण्डारी की "बंद दराजों के साथ" और मणिका मोहिनी की "कैरम की गोट" "एक ही बिस्तर पर" [दुश्मन" आदि कहानियों में पति के पूर्ण प्रेम के लिए तड़पती हुई नारी का चित्रण किया गया है। पति अपनी

पत्नी की भावनाओं उसके प्रेम का आदर नहीं करता उसे सिर्फ एक भोगवस्तु की दृष्टि से देखता है। उसका एक प्रकारसे शोषण ही करना चाहता है॥ ममता कालिया की कहानियों की नारी इस स्थिति के प्रति विद्रोह कर इसका पूर्ण अस्वीकार करती है। उनकी "सीट नम्बर छह" और "पीली लड़की " में नारी विद्रोह की प्रवृत्ति का चित्रण मिलता है ॥ कुसुम असंल की "स्पीडब्रेकर" दीप्ति की "धूप के अहसास" "देह की सीता" आदि में भी नारी के इसी विद्रोही रूप को चित्रित किया गया है॥

* काम - विषय में चित्रित नारी :-

पुरुष नारी की काम - विषयक भावनाओं को अपनी दृष्टि से चित्रित करता है जिसमें प्राय: ही नारी को मात्र खिलौना बनाया गया है। किंतु आधुनिक कहानियों में महिला लेखिकाओं ने इस विषयके बारे में अपने हृदयमें स्थित मनोकामनाओं की निश्चल अभिव्यक्ति बड़े सशक्त ढंग से की है जिसके कारण नारी मन के अंतरंग को बड़ी सुक्ष्मता से आँका गया है। पूर्ववर्ती कहानी लेखिकाओं ने इस ओर ध्यान ही नहीं दिया क्योकि वे भारतीय परंपरा में बध्द थीं । इसलिए उन्होंने अपनी इस भावनाओं को व्यक्त करने का साहस ही नही किया॥ किंतु आधुनिक नारी कहानीकारों ने रूढियों के नीचे पिसते हुए नारी मन को अस्वीकार करते हुए अपने सहज स्वाभाविक रूपमें में इसका चित्रण किया है।

इस दृष्टि से कृष्णा सोबती, मन्नू भंडारी, कृष्णा अग्निहोत्री, सुधा अरोड़ा, ममता कालिया, शशीप्रभा शास्त्री, निरुपमा सेवती, दीप्ति खंडेलवाल, मृदुला गर्ग, मणिका मोहिनी, सिम्मी हर्षिता, उषा प्रियवंदा आदि महिला कथाकारों की कहानियों में नारी मन के इस पक्ष की इमानदार अभिव्यक्ति की गई है। कुछ पुरुष कथाकारों ने भी इस क्षेत्र में महत्वपूर्ण रचनाएँ दी हैं, जिनमें कमलेश्वर, कृष्ण बलदेव वैद, जगदिश चतुर्वेदी, इब्राहिम शरीफ, महीपसिंह, मोहसर, अशोक अग्रवाल आदि की कहानियाँ विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

मन्नू भण्डारी की "तीन निगाहों की एक तस्वीर", "बाहों का घेरा," "ऊँचाई" शशिप्रभा शास्त्री की "गंध" दीप्ति की "आधार" निरुपमा सेवती की "सबमें से एक", "संक्रमण" मृदुला की "एक और विवाह" मणिका मोहिनी की "कैरम की गोट" तथा "उनका न होना" मृदुला की "कितनी कैदें", "झुटपुटा" कमलेश्वर की "तलाश" कृष्ण बलदेव वैद की "त्रिकोण", "अवसर" जगदीश की "बुढ़ापे की गंध" सतीश आलोक की "बहुत देर बाद" अशोक अग्रवाल की "फिर यह सब" दूधनाथ सिंह की "उसका बिस्तर" आदि कहानियों में अतृप्त कामभावना प्रदत्त नारी के आत्मद्वंद्व को बड़ी सूक्ष्मता से निरुपित किया गया है।[२१]

* प्रेम में चित्रित नारी :-

अब तक नारी की ओर पुरुष अधिकार की भावना से ही देखता आया है। आज के बदले और बदलते युग में नारी भी अपने स्वतंत्र व्यक्तित्व को पहचानने लगी है। उसे स्थापित करने का प्रयास कर रही है। आज नारी के प्रेम संबंधो में बहुत बदलाव आ गया है। यह प्रेम पिता - पुत्री, माता और सन्तान का वात्सल्य न होकर उसकी सेक्स भावनाओं से संबंध रखता है। इसमें रोमांटिक बोध भी है और आधुनिक बोध भी, आदर्श प्रेम का बोध भी है और सेक्स का बोध भी।

समकालीन हिन्दी - कहानी में प्रेम कभी रोमांटिकता के धरातलपर तो कभी रोमांटिकता से छुटकारा पाता है तो कभी वास्तविक अनुभूति का सामना करता है। इन कहानियों में प्रेम - संबंधी विचारोंको लेकर पुरानी पीढ़ी की नारी की कड़ी आलोचना की है। पहिला कहानीकारों की कहानियों में नारी की सहजता, कोमलता और भावुकता उजागर होती है। उन्होंने अपनी कहानियों में नारी की प्रेम-सम्बन्धी समस्याओं को ही प्रथम चित्रित किया है। इन लेखिकाओं ने इस समस्या को चित्रित करते वक्त अपनी निजी अनुभूतियों का सहारा लिया है, जिसके कारण यह कहानियाँ सजीव लगती हैं।

प्रेम-संबंधी पुरानी महिला कहानीकारों का [उषादेवी, कमला चौधरी] दृष्टिकोण रोमांटिक था। उन्होंने अपनी कहानियों में नारी के प्रेम में त्याग,

विरहमें आँसू बहाना, मिलन में अलौकिक सुख आदि का चित्रण किया है। किंतु सन्"६० के बाद की प्रमुख कथा लेखिकाओं ने [उषा प्रियवंदा, कृष्णा सोबती, मन्नू भण्डारी आदि] प्रेम और विवाह की समस्या की ओर नए दृष्टिकोण का परिचय दिया है। इन्होंने प्रेम की पारस्पारिक स्थिति का आलोचना की है अर्थात् प्रेम - सम्बन्धी परम्परागत सामाजिक धारणाओं का विरोध किया है। इन लेखिकाओं ने प्रेम में बाधा डालनेवाली रुकावटों का चित्रण किया है इससे प्रेम में टूटती हुई नारी का प्रामाणिक चित्रण हुआ है। प्रेम कभी परिस्थितियों का दास, कभी परिस्थितियों से जूझता तो कभी परिस्थितिपर विजय पाता है। इस काल की कानियों में प्रेम की उलझनों के कई चित्र प्राप्त होते हैं।

उषा प्रियवंदा की कहानियों में नारी-जीवन के खालीपन को चित्रित किया गया है। उषाजीने नारी की प्रेम में स्थित मानसिक उलझनों का सूक्ष्म चित्रण किया है। नारी का अकेलापन इनकी कहानी का मूल स्वर है। उषा की "जिंदगी और गुलाब के फूल," "स्वीकृति," "जाले," "दो अँधेरे," "कच्चे धागे," "एक कोई दूसरा" आदि कहानियों मे नारी मन की खीझ, झुंझलाहट, अकेलेपन की यातना, टूटने की विवशता, मन की छटपटाहट, प्रेम की निरर्थकता आदि का चित्रण किंया गया है।

कृष्णा सोबतीजी ने शारीरिक आवश्यकताओं की पूर्ति के पीछे पापबोध की अनुभूति नहीं, बल्कि वह एक सहज प्रक्रिया है इस दृष्टिसे नारी प्रेम को चित्रित किया है। "बादलों के घेरे," "यारों के यार," "तीन पहाड़," दीप्ति की "क्षितिज," "वह," "कड़ुवे सच," "अर्थ," "मोह," "आत्मघात" आदि कहानियाँ इस दृष्टिसे महत्वपूर्ण हैं।

पुरुष कहानीकारों की तुलना में महिला कहानीकारों की प्रेम-कहानियों में प्रेम संबंधी कोमलता और सूक्ष्मता अधिक दिखाई देती है। इन्होंने प्रेम के स्वरूप में सामाजिक बदलाव के अनुसार परिवर्तन करने का प्रयास किया है। महिला कहानीकारों का प्रेम-चित्रण संवेदना के स्तर पर किया है तो पुरुष कहानीकारों का प्रेम-चित्रण बौध्दिक स्तर पर किंया है। उदा. यही सच है [मन्नू भण्डारी] और छोटे-छोटे ताजमहल [राजेन्द्र यादव]

३. १९८९ की "सारिका" की कहानियों में चित्रित नारी

० आलोच्य विषय में कुलमिलाकर सत्रह कहानियाँ हैं और उनमें निम्नलिखित नारी समस्याओं को चित्रित किया गया है।

१. "आवागमन" में नारी स्वतंत्रता की समस्या को चित्रित किया है ।
२. "शिखर और शिखर" में प्रेम की असफलता का चित्रण है।
३. "सुंदर पड़ोस" में नारी सौंदर्य और अकेलेपन की समस्या है।
४. "जुमनू" में परित्यक्ता नारी की समस्या है।
५. "अब चिठ्ठी नहीं आयेगी" कहानी में दहेज की समस्या का चित्रण है।
६. "वह लड़की" में नौकरीपेशा नारी की समस्या का चित्रण है॥
७. "ट्रेक्टर का पहाड़" में नारी की आर्थिक परवशता और परंपरागत नारी का चित्रण है ॥
८. "प्राचीन और तीन चेहरे" में नारी की परवशता, रूढ़ि की मार, और व्यक्तित्व का हनन आदि को चित्रित किया है।
९. "चक्करघिन्नी" में नारी के मन की अंतर्द्वन्द्वता का चित्रण है ।
१० "ताशमहल" में नारी के पुनर्विवाह की समस्या को चित्रित किया गया है।
११. "आइने की वापसी" में प्रेम की असफलता और परित्यक्ता नारी की समस्या को चित्रित किया गया है।
१२. "प्रसंग" में प्रेम की असफलता और अनमेल - विवाह की समस्या का चित्रण है ।
१३. "अपने होने का एहसास" में परम्परा में बध्द नारी की समस्या चित्रित है।
१४. "इस्तिंजा का ढेला" कहानी में शिक्षा और नारी-स्वतंत्रता की समस्या का चित्रण है ।
१५. "तानसेन" में नारी - विवाह की समस्या का चित्रण है ।

१६. "उन्मुक्ति" में प्रेम की असफलता और नारी - स्वतंत्रता की सीमाओं का चित्रण है।

१७. "युक्ति" में नारी की आर्थिक दुर्बलता का चित्रण है।

"सारिका" सन १९८९ ई. की. सत्रह कहानियों में नारी के विविध रूपों का चित्रण मिलता है। कुछ कहानियों में नारी भारतीय नारी के आदर्शों से या भारतीय संस्कृति के बंधन में बंधी हुई दिखायी देती है तो कहीं वह पाश्चात्य संस्कृति से प्रभावित है। नारी की शिक्षा और उससे प्राप्त उसकी आर्थिक क्षमता के कारण वह हर समस्या का मुँह तोड़ जवाब दे रही है। "सारिका" १९८९ की कुछ कहानियों में नारी परवश तो कुछ कहानियों में नारी विद्रोही रूप में दिखायी देती है।

"जुगनू" और "आइने की वापसी" नामक दो कहानियों में परित्यक्ता नारी का चित्रण किया गया है। "जुगनू" कहानी की नायिका अपने पति का घर छोड़कर देवेन् नामक एक परपुरुष के साथ रहती है। "आइने की वापसी" में नबीला का पति उसे छोड़कर चला गया है। कमाल ने दूसरी शादी की है और कुछ वर्षों के बाद फिर वह नबीला के जीवन में प्रवेश करना चाहता है, तब नबीला उसके इस प्रस्ताव का सख्त विरोध करती है। किंतु इन दो कहानियों की नायिकाएँ आर्थिक दृष्टि से सबल होने के कारण ही विद्रोही रूप धारण करती है। भारतीय नारी के विरुद्ध वह पति की इच्छाओं को अस्वीकार करती है। वह अत्याचारों को मूक रूपसे सहना नहीं चाहती। पति से अलग होनेपर वह हिचकिचाती नहीं बल्कि आगे बढ़ने के लिए उत्साहित होती है। उसे किसी की सहारे के लिए विवश नहीं होती। अगर इन दो कहानियों को परखा जाय तो सन्" ६० के पूर्व और साठोत्तरी कहानियों में परित्यक्ता नारी के चित्रण में काफी अंतर दिखाई देता है। मार्कण्डेय की "एक दिन की डायरी" उषादेवी मित्रा की "पुतली जी उठ" यशपाल की "मंगला" विष्णुजी की "स्वप्नमयी कमलेश्वर की "एक अश्लील कहानी" राजेन्द्रजी की "लौटते हुए"सैंगर की "लम्बे दिन जलती रातें"में परित्यक्ता की

व्यथा की कथा अंकित है। इन कहानियों में चित्रित नारी डोर कटी हुई पतंग के समान है। ये कहानियाँ समाज के पुराने रूपों एवं नारी के दुर्बल चरित्रों को चित्रित करती हैं ॥ इनमें नारी की परवशता, दयनीयता, सास तथा समाज के अत्याचारों को मूक रूपसे सहते रहने की विवशता चित्रित है। इसप्रकार इन लेखकों की और "सारिका" १९८९ के लेखकों की परित्यक्ता नारी की ओर देखने की दृष्टि में फर्क है। तुलनात्मक दृष्टि से लेखकों के विचारों में फर्क का सबसे महत्वपूर्ण और मूल कारण सामाजिक परिस्थिति में आमूलाग्र बदल है। सत्येन् कुमार और नासिरा शर्माजी ने नारी के बदलते रूपों और उसके विचारों को परखा है और इसी दृष्टि से उसका चित्रण किया है । प्रिया और नबीला आर्थिक दृष्टिसे परिपूर्ण है इसीलिए वह पुरानी परित्यक्ता नारी की तरह विवश नहीं होती, बल्कि अपनी समस्या का सामना करती है। वह पुरानी नारी की तरह उसमें पिसना नहीं चाहती। और यही तुलनात्मक दृष्टि से फर्क उपर्युक्त कहानियों मे दिखाई देता है।

"शिखर और शिखर", "आइने की वापसी," "प्रसंग," "उन्मुक्ति" आदि कहानियों में प्रेम की असफलता का चित्रण किया गया है। "शिखर और और शिखर"कहानी में हरिदत्त भट्ट शैलेशजी ने प्रेमा के माध्यम से नारी का प्रेम में त्यागमयी रूप का चित्रण किया है। प्रेमा एक बादीण "[नर्तकी] की बेटी होने के कारण और उसका प्रेमी [विमलदा] ब्राह्मण होने के कारण उनका सच्चा प्रेम असफल हो जाता है। समाज की अंध - रूढ़ियों के कारण प्रेमा अपने प्रेम में हार जाती है । वह अपने प्रेमी को हमेशा के लिए आपने से अलग होने का वचन देती है॥ "आइने की वापसी" में नासिरा शर्माजी ने भी नारी के प्रेम की असफलता का ही चित्रण किया है॥ इस कहानी की नबीला पढ़ी - लिखी होनहार युवती है, जो मजदूर युनियन की कार्यकर्ती और एक समाचार पत्र की संपादिका है। फिर भी वह विरहमें तड़पती रहती है। जब कमाल उसे छोड़कर चला जाता है तो बाहरी रूपसे वह अपने विरह को छुपाना चाहती है किंतु अंदर ही अंदर कुढ़ती रहती है॥ वह दिन - रात कमाल की पुरानी यादों मे तड़पती रहती है, जो भारतीय नारी की घुटनशीलता का प्रतीक है । "प्रसंग" की नायिका ममता एक डाक्टर है किंतु वह एक विवाहित पुरुष के प्यार में फँस जाती है। वह उससे विवाह तो नहीं कर सकती किंतु अपने प्यार को

तोड़ना भी नहीं चाहती। प्रेमी की अचानक मृत्यु के बाद उसकी बुआ उसका विवाह अधेड उम्र के पुरुष के साथ कर देती है। ममता कुछ निर्णय नहीं ले पाती और चुपचाप विवाह के लिए राजी हो जाती है ॥ किंतु विवाह के बाद भी आदर्श माँ और पत्नी नहीं बन सकती क्योंकि दिन - रात वह अपने पुराने प्रेमी के खयालों में मश्गुल होती जाती है। "उन्मुक्ति" में डा. पूर्णिमा केडिया जी ने पुरुष का अहं नारी को किस प्रकार अपने पीछे घसीटता है इसका मार्मिक चित्रण किया है । प्रेमविवाह के उपरान्त भी कविता सुखी नहीं है, क्योंकि हरवक्त सुधीर उसपर अपना अधिकार जमाना चाहता है॥ एक मामूली स्कूटर को लेकर वह कविता को जब डाँटता है तो कविता सोचती है कि क्या यही प्रेम का संसार है ? क्या इसीके लिए वह जीती है और जीती रहेगी जिंदगी भर ? किंतु हमेशा की तरह ही वह इस प्रश्न से निरुत्तर ही रहती हैं । इसप्रकार प्रेम की असफलता का कविता भी शिकार हो गयी है॥
अतः इन चार कहानियों में प्रेम की असफलता का चित्रण है। इनमें प्रेम की असफलता के कारण अलग - अलग है किंतु वे एकही समस्याओं में घिरी नारियाँ हैं । इसी प्रकार तुलनात्मक दृष्टि से अगर देखा जाय तो सन्" ६० के पूर्व और साठोत्तरी कहानियों में नारी प्रेम की घुटनशीलता का इसीप्रकार चित्रण किया गया है। उषा प्रियवंदा की "जिंदगी और गुलाब के फूल", "स्वीकृति", "कच्चे धागे" उषादेवी मित्रा के "साधना का उन्माद" मन्नू भण्डारी की "यही सच है" यादव की "छोटे छोटे ताजमहल" यशपाल की "प्रतिष्ठा का बोझ," "गुडबाई दर्दे दिल" मोहन राकेश की "धुंधला दीप" कमलेश्वर की "तीन दिन पहले रात" आदि में नारी के प्रेम, पुरुष की कठोरता, नारी की घुटन आदि का मार्मिक चित्रण मिलता है॥ इन कहानियों में नारी मन की स्वीकृ, अजनबीपन का बोध, अकेलेपन की समस्या टूटने की विवशता, मन की छटपटाहट, प्रेम की निरर्थकता का चित्रण मिलता है॥

"ट्रेक्टर का पहाड़", "प्राचीन और तीन चेहरे", "अपने होने का अहसास" और "युक्ति" - इन चार कहानियों में नारी की आर्थिक दुर्बलता और उससे प्राप्त दुष्परिणामोंका चित्रण मिलता है॥ इनमें परंपरांगत नारी पीडा का चित्रण मिलता है॥ "ट्रेक्टर का पहाड़" कहानी की नायिका एक मामूली ट्रेक्टर के कारण अपने मायके नहीं जा सकती। टी. बी. जैसी लंबी

बीमारी से त्रस्त पिता को नहीं देख सकती। ससुराल में भी उसे योग्य स्थान नहीं, क्योंकि पति कुछ कमाता नहीं। और वह तो ज्यादा पढ़ी - लिखी नहीं जिसके कारण आर्थिक दुर्बलता की वह शिकार है। पिता से कर्ज लेकर पति ने ट्रेक्टर खरीदी। और वह कर्ज नहीं चुकाया जिसके कारण पिता और भाभी नाराज है और इस सब परिस्थिति को भुगतना पड़ा है कल्याणी को। इस समस्या का उसे अंततक रास्ता नहीं मिल पाता और मन - ही - मन वह घुटती रहती है "प्राचीन और तीन चेहरे" कहानी की नायिका दुल्लो भी आर्थिक परवशता से तंग है। दुल्लो अक्ल की तेज है, पढ़ने की कसक है, उम्मीद है किंतु गरीबी के कारण पढ़ नहीं सकती। गरीबी के कारण उसका पूरा जीवन लोगों के घर चौका-बतन करते ही बीतता है। "अपने होने का एहसास" में नायिका का पति अमीर है किंतु नायिका गरीब घर की होने के कारण पति उसका शोषण करता रहता है। वह गरीबी के कारण अनपढ़ रह गयी है, इसीलिए पति अपने बच्चे तक को उसके पास परवरिश के लिए रख नहीं सकता। इस सबके पिछे नारी की आर्थिक परवशता ही मूल है। "युक्ति में जया आर्थिक दृष्टि से दुर्बल होने के कारण अपने चाचा - चाची के अंधे प्यार में फँसती है। एक नौकरानी की तरह उसका इस्तेमाल चाची करना चाहती है और जया उसका शिकार बनती है किंतु वह दयनीय है अतः यह सब सहनाही पड़ता है। इसप्रकार आर्थिक दुर्बलता नारी की दासता मूल कारण है। इन कहानियों के लेखको ने नारी की परंपरांगत स्थितिका चित्रण किया है। अतः इन लेखकों में पुरानी दृष्ठि का ही परिचय मिलता है। वे परम्परा में बध्द नारी का चित्रण करना चाहते है। इनकी कहानियों में चित्रित नारियाँ मौन रहकर अत्याचारों को सहती रहती हैं। वे इसमें विवश है क्योंकि गरीबी के साथ - साथ वे अनपढ़ है। इसलिए अपनी समस्या से वह बाहर आ ही नहीं सकती। इसप्रकार इन कहानीकारों ने परंपरांगत नारी की घुटनशीलता का, उसकी व्यथा, विवशता को चित्रित किया है।

"वह लड़की" कहानी में इसका चित्रण मिलता है कि नौकरीपेशा नारी को ऑफिस को बास या पुरुष किस प्रकार तंग करते है। नौकरी के नामपर उसक किसप्रकार शोषण करते है। अपने परिवार के पोषण के लिए नारी को नौकरी

करना आवश्यक होता है। किन्तु उसकी इस मजबूरी का समाज दूसरे रूपमें फायदा उठाना चाहता है। नौकरी के नामपर नारी को वासना की दृष्टि से देखा जाता हैं। कभी - कभी नारी उसका शिकार होती है। किंतु रमाकांतजी ने इस कहानी की नायिका को पुरुष की वासनामय का शिकार नहीं होने दिया॥ ऑफिस के बॉस उसे छोटी मछली बनाकर निगलाना चाहते हैं किंतु नायिका अपने आपको छोटी मछली नहीं बनाना चाहती, वह अपने आपको निगलाना नहीं चाहती। वह ऐसी नौकरी को हरगिज नहीं चाहती जहाँपर उसका व्यक्तिगत फायदा उठाया जाय॥ सन्"६० के पूर्व और साठोत्तरी कहानियों में भी नारी की नौकरी समस्या को चित्रित किया गया है। विष्णुजी की "आकाश की छाया में" पहाड़ी की "इमली की पत्तियाँ" राजेन्द्र उवस्थी की "दफ्तर की लड़की" शम्भू प्रसाद शाह की "स्टेनो" कमलेश्वर की "एक थी निर्मला" धर्मवीर भारती की "कुलटा" मोहन राकेश की "काला रोजगार" मन्नू की "रानी माँ का चबूतरा" आदि कहानियों में युवतियों की नौकरी की समस्याओं और उनकी इज्जत लूटे जाने के प्रश्नों की चर्चा प्राप्त होती है।

उपर्युक्त कहानियों में और रमाकांत जी की "वह लड़की" कहानी में तुलनात्मक दृष्टि से फर्क है। "वह लड़की" कहानी में नायिका नौकरी के कारण बॉस के जाल में फँसना नहीं चाहती। वह इसलिए अंत में बॉस से कहती है कि - "मैं ऐसी मछली नहीं हूँ जिसे निगला जा सके।" रमाकांतजी नौकरी की समस्या में नारी को एक विद्रोही रूप में चित्रित करना चाहते हैं।

"ताशमहल", "प्रसंग" "इस्तिंजा का ढेला", "तानसेन" - इन चार कहानियों में नारी की विवाह समस्या को चित्रित किया गया है। "ताशमहल" में नारी के पुनर्विवाह की समस्या को चित्रित किया गया है। "प्रसंग" में अनमेल-विवाह का चित्रण है। "इस्तिंजा का ढेला" में शिक्षित नारी के विवाह की समस्या का चित्रण है। और "तानसेन" में अपढ़ और कुरूप नारी के विवाह की समस्या को चित्रित किया गया है ।

"ताशमहल" में चित्रा मुद्‌गलजी ने शोभना के माध्यमसे पुनर्विवाह की की समस्या को उठाया है। शोभना ने अपने पहले पति [दिवाकर] के बेटे बच्चू को लेकर दूसरा विवाह कर लिया है। उसके बाद वह रोनू को जन्म देती है। निशीथ [पति] के मनमें रोनू के जन्म के बाद बच्चू के प्रति घृणा होने लगी। निशीथ शोभना के मातृत्व पर ही संदेह करने लगा। वह बच्चू को शोभना से अलग करना चाहता है। किंतु शोभना इसके लिए कदापि तैयार नहीं। वह एक माँ है और माँ कभी भी अपनी संतान को त्यागकर जी नहीं सकती। पुरुष हमेशा नारी पर अधिकार जताना चाहता है। इसप्रकार इस कहानी में नारी के पुनर्विवाह से प्राप्त समस्या को चित्रित किया गया है। "प्रसंग" में उषा प्रियवंदा ने अनमेल विवाह की समस्या को चित्रित किया है। ममता स्वंय एक डाक्टर है किंतु वह एक विवाहित पुरुष के प्यार में फँस गयी है, और प्रेमी की अचानक मृत्यू के कारण उसकी बुआ ममता का विवाह एक अधेड़ उम्र और दो बच्चियों के बाप से करती है। ममता विवाह के लिए मजबूर है। वि ाह के बारे में ठीक उक्त पर योग्य निर्णय नहीं ले सकती। और अंतमें बुआ और पिता की चिंता को मिटाने के लिए अनमेल - विवाह के लिए तैयारा होती है। वह इसविवाह से संतुष्ट तो नहीं हो सकती किंतु अंततक उसमें घुटती रहती है। "इस्तिंजा का ढेला में माजदा असदजी ने पढ़ी - लिखी नारी के विवाह की समस्या को चित्रित किया है। समाज आधुनिकता के कितने भी नारे लगाये, नारी स्वतंत्रता का नारा लगाये किंतु आज भी नारी को पुरुष और समाज अपने पीछे ही घसीटतना चाहता है। इस कहानी की नायिका मुस्लिम है। वह जब कॉलेज में दाखिला लेती है तो घर में कुहराम मच जाता है। नायिका का विवाह बचपन में ही उसके चचेरे भाई से तय किया है। किंतु भाई ममदू आगे पढ़ने से उसका विरोध करता है। वह पढ़ी - लिखी लड़कियों की तुलना इस्तिंजे के ढेले से करता है। ज्यादा पढ़ी - लिखी लड़की से शादी का सोचना तक वह गलत मानता है। किंतु नायिका इसका विरोध करती है। वह इस तरह के संकुचित विचार के पुरुष से ब्याह नहीं करना चाहती। वह आगे चलकर खूब पढ़ती है, यह बात अलग है किंतु इसमें लेखिका यह बताना चाहती है कि आजकल लड़कियों का पढ़ना भी विवाह की दृष्टि से एक बहुत भारी नयी समस्या हो गयी है। उसका पढ़ना पुरुष को अपमान लगता है।

अपने में स्थित अहं के कारण वह नारी को आगे नहीं बढ़ने देता॥ और इसी का चित्रण इस कहानी में दिखायी देता है। "तान्सेन" नारी के विवाह की समस्या को चित्रित किया है। तान्से एक बहुत ही कुशल और नेक नौकारानी है। किंतु सौंदर्यहीनता के कारण उसका विवाह कहीं भी तय नहीं हो पाता। उसकी इस व्यथा को उसके ही करुणापूर्ण शब्दों में लेखिकाने वर्णन किया है, वह लेखिका से कहती है - "मैं ठुंजी के विवाह में हरगिज नहीं जाऊँगी। हर कोई ठुंजी की सुंदरता की सराहना करेगा और मेरी कुरूपता पर मुझे उलाहना देगा। मेरी उम्र है उससे दुगुनी। मेरी शादी तो होती नहीं - - - - - पहले पहल झूठी आशा थी। मैं अपनी देह को खूब सजाती थी, संवारती थी। लेकिन भगवान ने एक न सुनी। कितने सालों से मैं यह घुटन सह रही हूँ..... आखिर मैंने सोचा, क्या फायदा है घर जाकर ...."[२२]

इसप्रकार नारी के विवाह में आर्थिक पक्ष के साथ - साथ उसकी सौंदर्यहीनता के कारण। भी विवाह के होने में एक समस्या है। तानसे इसमें घुटती रहती है। वह इस समस्या का समाज और घर के लोगों से बदला लेना चाहती है। और उसमें वह अपनी जानतक दे देती है। वह समाज को यह दिखाना चाहती है कि एक कुरूप नारी भी पत्नी और माँ बन सकती है, किंतु यह सब करने के लिए उसे अपनी जान की कीमत चुकानी पड़ती है।

इसप्रकार इन चार कहानियों में नारी के विवाह की समस्याओं को अलग - अलग दृष्टि से चित्रित किया है। "ताशमहल" और "इस्तिंजा का ढेला" इन दो कहानियों में नारी का विद्रोही रूप दिखायी देता है। "ताशमहल" में चित्राजी ने नारी को दयनीय नहीं दिखाया। पुनर्विवाह की समस्या को चित्रित करते हुए उन्होंने अंतमें यह दिखा दिया है कि नारी पुरुष के बिना भी रह सकती है। शोभना नौकरी करती है इसलिए वह पति को छोड़कर तबादला करवाकर दूसरे गाँव में रहने के लिए तैयार होती है॥ "इस्तिंजा का ढेला" की नायिका भी अपने शिक्षित होने के कारण ही विवाह की समस्या में पिसना नहीं चाहती। वह आगे पढ़ना चाहती है। ममदू जैसे हीनभावना से ग्रस्त पुरुष के साथ विवाह नहीं करना चाहती॥ वह सिर्फ

विवाह के खातिर एक अनपढ़ नारी के रूप में रहना नहीं चाहती। "प्रसंग" और "तान्सेन" में नारी की परंपरागत घुटन को चित्रित किया है। "प्रसंग" में उषाजी ने अनमेल विवाह में फँसी नारी का चित्रण किया है। ममता एक डॉक्टर होकर भी अनमेल - विवाह का शिकार होती है। और अंततक संतुष्ट नहीं हो सकती। तो "तान्सेन" में चंपा लिमयेजी ने अनपढ़, कुरूप नारी के विवाह की समस्या में घुटती नारी का चित्रण किया है। इस प्रकार "ताशमहल" और "इस्तिंजा का ढेला" में नारी विवाह की समस्या का मुकाबला करती है तो "प्रसंग" और "तान्सेन" में नारी की विवाह की परंपरागत घुटन का चित्रण मिलता है।

सन्" ६० के पूर्व और साठोत्तरी कहानियों में भी नारी की विवाह - समस्या को चित्रित किया गया है। अश्क की "अंकुर" और इलाचन्द जोशी की "चौथे विवाह की पत्नी" में अनमेल - विवाह का चित्रण है जो उपर्युक्त उषाजी की कहानी "प्रसंग" से मेल खाती हैं। विष्णु प्रभाकर की "दूसरा वर" शिवप्रसाद सिंह की "नन्हों" शैलेशजीकी "रुका हुआ रास्ता" आदि कहानियों में नारी के पुनर्विवाह की समस्या को चित्रित किया गया है। "ताशमहल" में चित्राजीने इसी समस्या को चित्रित किया है। पुनर्विवाह से प्राप्त नारी समस्याओं का एक ही प्रकारका चित्रण अर्थात नारी की पुनर्विवाह से प्राप्त घुटन, पुरुष का अहं और अधिकार भावना आदि का चित्रण मिलता है। किंतु नारी सभी अत्याचार सह सकती है किंतु अपनी संतान पर होते हुए अत्याचार देख नहीं सकती। इसलिए "ताशमहल" की नायिका विद्रोही रूप धारण करती है। वह अंतमें अपनी संतान के लिए पति से अलग रहने का फैसला करती है। "इस्तिंजा का ढेला" में नारी के विवाह की ,और देखने की दृष्टि में बदलाव का चित्रण है। "तान्सेन" में परंपरागत नारी की पीड़ा का ही चित्रण किया गया है। जो सन् "६० के पूर्व की प्रमुख लेखिकाओं का ही अनुगमन है।

"अब चिठ्ठी नही आयेगी" कहानी में नारी की दहेज समस्या को चित्रित किया है। प्राचीन काल से चली आयी इस भयंकर समस्या का कर्तार सिंह दुग्गलजी ने अत्यंत मार्मिकता से चित्रण किया है। इस कहानी की नायिका

अन्य कहानियों की नायिकाओं की तरह दहेज के लिए अपनी जान से हाथ धो बैठती है । किंतु इस कहानी में लेखक दहेजप्रथा के नए पहलू को दिखाना चाहते है। इस कहानी की नारी हर नारी की तरह ससुराल में अपने आपको जला नहीं देती बल्कि वह मायके में अपनी माँ के घर खुद को जला लेती है । लेखक उसके इस नये कदम से यह संकेत देना चाहता है कि हर सास पहले माँ होती है, और पहले माँ को यह सबक सीखना होगा। उसकी इस नई कृतिसे लेखक ने नई संवेदना जगाई है। लेखक यह कहना चाहता है कि पहले हर माँ को इस प्रथा को नष्टकरना चाहिए ।। तभी वह आदर्श सास बन सकती है, और तमाम निष्पाप बहुओं की हत्या बच सकती है । लेखक इसमें परंपरागंत नारी पीड़ा को आधुनिक रूप में चित्रित करना चाहता है। वह परंपरागत स्थिति में बदलाव लाना चाहता है।। अत: लेखक का एक नया दृष्टिकोण इस कहानी की एक नयी और महत्वपूर्ण देन है ।

"आवागमन" कहानी में नारी - स्वतंत्रता की सीमाओं का चित्रण किया गया है। मंजरी स्वतंत्र विचारों से जीना तो चाहती है किंतु उसकी स्वतंत्रता में पारिवारिक और राजनैतिक सीमाएँ हैं और इसलिए उसकी स्वतंत्रता में बाधाएँ उत्पन्न होती हैं ।। मंजरी दिल्ली छोड़कर अपने गाँव इसलिए आती है कि, गाँव की नारियों की समस्याओं को दूर करे। वह देहात के अन्य लोगों की भी मदद करना चाहती है। किंतु इस कार्य में उसके चाचा ही रुकावट डालते हैं । इसका कारण यह है कि वह देहात में सिर्फ अपना रोब जमाना चाहते हैं। वह किसी मामूली लड़की को अपने रास्ते में रुकावट के रूप में देखना नहीं चाहते । उनके इस राजनीतिक मकसद के सामने मंजरी मजबूर है। अर्थात नारी की इन्हीं सीमाओं के कारण ही वह हमेशा अपनी हार को मूक रूपसे सहती है। तुलनात्मक दृष्टि से देखा जाय तो उषा प्रियवंदा, मेहरून्निनसा, परवेज, रश्मि तन्खा, मृदुला गर्ग, गिरिराज किशोर, मन्नू भण्डारी, सूर्यबाला आदि लेखकों ने भी नारी के इसी व्यक्ति स्वातंत्र्य की छटपटाहट को प्रस्तुत किया है।। नारी यदि अपने इस व्यक्ति - स्वातंत्र्य को पा लेती है तो वह अब अपनी स्थिति को सार्थक अनुभव करती है, किंतु अधिकांशत: समकालीन कहानी में उसकी उस पीड़ा का बोध होता है, जो पुरुष अधिकृत समाज में

उसे अपने "स्व" को खोकर झेलनी पड़ती है और जिस स्थिति में वह जीने के लिए अभिशप्त है॥

"सुंदर पड़ोस" में प्रेम जनमेजयजी ने नारी के अकेलेपन की समस्या को उठाया है। जब कभी युवा लड़की किसी कारणवश अकेली रहने को विवश होती है तब समाज उसके इस अकेलेपन का दुहरे रूपमें फायदा उठाना चाहता है। इस कहानी की नायिका निहारिका के साथ भी यही होता है॥ निहारिका लेखक के पड़ोस में ही रहती है। तब सभी पास पंड़ोस के शिक्षित और अशिक्षित उसकी ओर संदेह की दृष्टि से देखते है, और अपने व्यंग - बाणोंसे उसका जीना दुभर कर देते हैं। आज भी पढ़ी - लिखी नारी नौकरी, व्यवसाय या अन्य किसी भी कारण से अगर अकेली रहने लगती है तो समाज उसके जीने को तंग कर देता है। उसकी मदद करने के बदले उसका शोषण करना चाहते है। और यह कोई नारी की वर्तमान समस्या नहीं है बल्कि युगों से नारी इस समस्या से प्रताड़ित है। वह पढ़ी - लिखी हो, आर्थिक दृष्टि से सबल हो फिर भी उसकी इस समस्या का रूप नहीं बदला॥ समाज आधुनिकाता के नारे लगता है किंतु नारी की ओर देखने की उसकी दृष्टि आज भी पुरानी ही है और इसका चित्रण सन्" ६० के पूर्व और साठोत्तरी कहानियों में भी मिलता है। और यही चित्रण इस कहानी में भी किया गया है।

"चक्करघिन्नी" कहानी छोटी किंतु मार्मिक है। इसमें मृदलाजीने यह संकेत किया है कि नारी को समय के अनुसार बदलना आवश्यक है। विनीता के माँ - बाप डाक्टर हैं इसलिए बचपनसे ही विनीता को उनका पूरा प्यार नहीं मिला। इसलिए बड़ी हो जाने के बाद उसने यह फैसला किया कि वह कोई नौकरी या अन्य काम नहीं करेगी बल्कि एक आदर्श पत्नी और माँ बनेगी। इसलिए उसने झट से शादी की और वह अपनी विवाहित जिंदगी खुशी से जीने लगी। कुछ वर्षों के बाद बच्चे ही उसकी नौकरी की माँग करने लगे। उसे बात - बात पर बाहरी परिवेश की बातें सुनाने लगे तो विनीता को भी लगा कि घर ही सब कुछ नहीं है बल्कि जिंदगी में स्वयं को भी कुछ करना चाहिए॥ और यह सब

करके भी अनेक नारियाँ अपने पारिवारिक जीवन को अच्छी तरह निभा सकती हैं । और अंतमें विनीता अपने विचारों को बदलकर नौकरी करने लगती है । मृदलाजी का यह कहना है कि नारी को घर से बाहर आना चाहिए ।। आधुनिक युग की यह माँग है और इसी की ओर लेखिका संकेत करना चाहती है।

उपर्युक्त विस्तृत विवेचन के आधारपर यह कहा जा सकता है कि "सारिका" १९८९ में प्राप्त कहानियों में कही नारी के परंपरागत रूप का चित्रण है तो कहीं वह आधुनिक रूप में चित्रित है। कहीं वह अपनी समस्या का सामना करती है तो कहींपर वह भारतीय परंपरागत नारी की पीड़ा को ही अपनी पीड़ा समझकर उसे मूक रूपसे सहती रहती है। कई कहानियों में नये कहानी कारों ने पुरानी नारी की समस्याओं को नई दृष्टि से प्रस्तुत किया है, तथा उन समस्याओं का समाधान नई दृष्टि से खोजने का प्रगतिवादी दृष्टिकोण प्रस्तुत किया है।।

****

:::: संदर्भ - सूची ::::

१. डा. कु. नूरजहाँ	- हिन्दी कहानी में यथार्थ वाद -	- पृ. २२४
२. वही	- -"-	- पृ. २२८
३. डा. उर्मिला गुप्ता हिंदी	- हिन्दी कथा साहित्यके विकास में महिलाओं का योग	- पृ. ८-९
४. वही	- -"-	- पृ. १५८
५. वही	- -"-	- पृ. १८०-१८१
६. वही	- -"-	- पृ. २१३
७. उर्मिला गुप्ता	- स्वातंत्र्योत्तर कथा लेखिकाएँ	- पृ. २०
८. वही	- -"-	- पृ. द ४०५
९. डा. सु. गो. गोकाककर	- मार्क्सवाद और हिंदी कहानी	- पृ. १३४
१०. वही	- -"-	- पृ. १३६
११. वही	- -"-	- पृ. १४२
१२. वही	- -"-	- पृ. १५४ -१५५
१३. डा. सन्तबख्श सिंह	- नई कहानी नये प्रश्न	- पृ. ९३
१४. डा. निलम गुप्ता	- हिन्दी कहानी और रचना सिध्दान्त	- पृ. १३२ -१३३
१५. उषा प्रियवंदा	- कितना बड़ा झूठ [संबंध]	- पृ. २२
१६. मन्नू भण्डारी	- त्रिशंकु [ए खाने आकाश नाई]	- पृ. १७८-१७९
१७. डा. पुष्पपाल सिंह	- समकालीन कहानी युगबोध के संदर्भ	- पृ. ७०-७१
१८. डा. सन्तबख्श सिंह	- नई कहानी नये प्रश्न	- पृ. ५५ - ५६
१९. डा. पुष्पपाल सिंह	- समकालीन कहानी युगबोध के संदर्भ	- पृ. १८५
२०. वही	- -"-	- पृ. ५३-५४
२१. वही	- -"-	- पृ. १७६
२२. चंपा लिमये	-"तानसेन "[नवबंर - सारिका-१९८९]	- पृ. ७३-७४

////////////